वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 19 अंक 1 कुल पृष्ठ-8 9 से 15 नवम्बर, 2023 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853124 सम्वत् 2080 आ. शु.-12

आर्य जगत् के तपस्वी युवा संन्यासी स्व. स्वामी श्रद्धानन्द जी की प्रथम पुण्यतिथि पर विशाल प्रेरणा सभा का आयोजन

आर्य जगत् के तपोनिष्ठ संन्यासी स्वामी प्रणवानन्द जी की अध्यक्षता एवं स्वामी आर्यवेश जी के सान्निध्य में प्रेरणा सभा हुई सम्पन्न

आर्य जगत् के तपस्वी युवा संन्यासी, प्रखर वक्ता एवं कर्मठ संगठनकर्ता महात्मा श्रद्धानन्द जी की प्रथम पुण्यतिथि के अवसर पर 9 नवम्बर, 2023 को जाट धर्मशाला, पलवल में विशाल प्रेरणा सभा का आयोजन किया गया। प्रेरणा सभा की अध्यक्षता श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती ने की तथा सार्वदेशिक सभा के यशस्वी नेता स्वामी आर्यवेश जी का विशेष सान्निध्य रहा। उनके अतिरिक्त कर्मठ एवं जुझारू संन्यासी स्वामी विजयवेश जी, तेजस्वी युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल आर्य, महात्मा वेदपाल जी पानीपत, वैद्य बृजेन्द्र आर्य, मानव सेवा प्रतिष्ठान के कार्यकारी अध्यक्ष श्री रामपाल शास्त्री, पूर्व विधायक श्री रघुवीर सिंह तेवतिया, कांग्रेस नेता श्री विजय प्रताप, स्थानीय विधायक श्री दीपक मंगला, कुंवर रमेश राणा, श्री हरिश्चन्द्र शास्त्री आदि भी प्रेरणा सभा में सम्मिलित हुए। क्षेत्र की अनेक आर्य समाजों से भारी संख्या में आर्यजन पहुंचे। प्रेरणा सभा का संयोजन कर्मठ नैष्ठिक ब्रह्मचारी श्री राजदेव आर्य ने किया।

प्रातः 9 से 10 बजे तक यज्ञ किया गया और उसके पश्चात् प्रेरणा सभा विधिवत रूप से प्रारम्भ हुई। प्रेरणा सभा को सम्बोधित करने वालों में सर्वश्री रघुवीर सिंह शास्त्री, प्रधान आर्य समाज सेवा सदन बल्लभगढ़, श्री ज्ञानचन्द शास्त्री आर्य समाज टिकरी ब्राह्मण, श्री जय प्रकाश आर्य प्रधान आर्य समाज जवाहर कॉलोनी, आर्य समाज ओमेक्स सिटी, श्री सत्यपाल आर्य, श्री तोषराम आर्य, श्री शिव सिंह आर्य औरंगाबाद, श्री सतीश बंसल फरीदाबाद, श्री हरिओम शास्त्री फरीदाबाद, श्री जितेन्द्र आर्य बल्लभगढ़, श्री प्रमोद शास्त्री आर्य समाज न्यू कालोनी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इनके अतिरिक्त वयोवृद्ध आर्य भजनोपदेशक महाशय खेम सिंह आर्य, लाला मेघराज आर्य फरीदाबाद, श्री ठाकुर लाल आर्य औरंगाबाद, श्री तेजवीर सिंह मितरौल, श्री नरेन्द्र आर्य आलापुर, श्री धर्मेन्द्र मलिक, श्री महेश अग्रवाल, श्री यादराम आर्य, श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य, श्री नरेन्द्र आर्य, श्री नारायण सिंह आर्य बनचारी, श्री चन्द्रपाल आर्य हथीन, श्री राजपाल दहिया बहादुरगढ़, श्री माणिकलाल आर्य आदि की भी विशेष उपस्थिति रही।

स्वामी श्रद्धानन्द जी के दीक्षा गुरु श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी पलवल, फरीदाबाद, मेवात आदि क्षेत्रों के अतिरिक्त देश के विभिन्न क्षेत्रों में वेद प्रचार का कार्य पूरी निष्ठा के साथ करते थे। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने आर्य समाज एवं वेद प्रचार के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित किया।

सार्वदेशिक सभा के यशस्वी नेता स्वामी आर्यवेश जी कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी बहुत ही जुझारू एवं प्रखर वक्ता थे। वे व्यायाम प्रशिक्षण शिविरों के माध्यम से युवाओं को संस्कारित करने का कार्य करते रहते थे। वे अपनी बात को बेबाकी से रखते थे, उन्होंने वेद विरुद्ध बातों को कभी स्वीकार नहीं किया और सत्य को सत्य कहने से नहीं चूकते थे। ऐसे प्रखर आर्य संन्यासी बहुत कम देखने को मिलते हैं। उन्होंने आर्य युवक परिषद् के कार्यों में अपनी विशेष भूमिका निभाई।

युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी ने कहा कि आर्य समाज संगठन की एक ओजस्वी वाणी जो स्वामी श्रद्धानन्द जी के रूप में सुनने को मिलती थी, वो सदा के लिए मौन हो गई है। आज हम सब उनकी प्रथम पुण्य तिथि के अवसर पर यहां उपस्थित हुए हैं तो हम सबको यह प्रण करना चाहिए कि पूरे देश में युवाओं को चरित्रवान एवं राष्ट्रभक्त

शेष पृष्ठ 4 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

सफलता में बाधक – नकारात्मक सोच

– सीताराम गुप्ता

हेनरी फोर्ड ने कहा है कि अगर आपको विश्वास है कि आप सफल हो सकते हैं तो आप सही हैं और अगर आपको विश्वास है कि आप सफल नहीं हो सकते तो भी आप सही हैं। हमारा विश्वास ही सफलता प्रदान करता है और हमारा विश्वास ही असफलता प्रदान करता है लेकिन दोनों प्रकार के विश्वासों में अन्तर होता है। एक सकारात्मक विश्वास है तो दूसरा नकारात्मक विश्वास। सकारात्मक विश्वास सफलता प्रदान करने में सक्षम है तो नकारात्मक विश्वास असफलता के लिए उत्तरदायी है। कल ऑफिस जाने के लिए जैसे ही घर से निकले बरसात हो गई और सारे कपड़े खराब हो गये जिससे दिन भर परेशानी होती रही। लेकिन इसका ये अर्थ तो नहीं कि आज भी वैसा ही होगा या हमेशा ही ऐसा होता रहेगा। क्या ऐसा सोचकर ऑफिस जाना ही छोड़ दिया जाये? जहाँ प्रायः रोज बारिश होती है वहाँ भी लोग काम पर जाते ही हैं।

एक बार वैज्ञानिकों ने एक प्रयोग किया। उन्होंने एक एक्वेरियम में एक बड़ी पाइक मछली को रखा और उसी एक्वेरियम में उसके खाने के लिए कुछ छोटी मछलियाँ रख दीं। जब भी बड़ी पाइक मछली को भूख लगती वो छोटी मछलियाँ खा लेती। कुछ दिनों बाद जब एक्वेरियम में सारी छोटी मछलियाँ समाप्त हो गई तो वैज्ञानिकों ने एक्वेरियम के बीच में कांच की एक दीवार लगा दी और दीवार के दूसरी तरफ पहले जैसी ही छोटी मछलियाँ डाल दीं। अब बड़ी पाइक मछली को जब भूख लगती वो छोटी मछलियों की ओर लपकती लेकिन बीच में कांच की दीवार होने के कारण उससे जा टकराती जिससे हर बार उसे चोट लगती है। कुछ समय तक तो ये सिलसिला जारी रहा लेकिन बार–बार चोट लगने और छोटी मछलियों तक न पहुँच पाने के कारण बड़ी पाइक मछली ने कांच की दीवार के पार तैरती छोटी मछलियों को खाने की कोशिश करना ही छोड़ दिया।

बड़ी पाइक मछली भूख से बुरी तरह व्याकुल थी लेकिन आगे उसने अपनी भूख मिटाने के लिए किसी तरह का कोई प्रयास नहीं किया और चुपचाप एक कोने में जाकर ठहर गई। जब वह भूख के कारण अत्यन्त व्याकुल अवस्था में पहुँच गई तो वैज्ञानिकों ने एक्वेरियम के बीच में लगाई गई कांच की दीवार को हटा दिया। अब बड़ी पाइक मछली आसानी से छोटी मछलियों को अपना आहार बना सकती थी लेकिन उसने ऐसा नहीं किया और कुछ दिनों के बाद वह भूख से तड़प–तड़प कर मर गई। प्रश्न उठता है कि बाद में वहाँ पर्याप्त संख्या में छोटी मछलियाँ होने पर भी बड़ी पाइक मछली ने उन्हें अपना शिकार क्यों नहीं बनाया? वास्तव में पहले अनेक कोशिशों में असफल व घायल होने के कारण बड़ी पाइक मछली ने मान लिया कि अब कोई कोशिश काम नहीं आयेगी। एक नकारात्मक विश्वास के लिए उसकी कंडीशनिंग हो गई और इस नकारात्मक विश्वास ने ही उसकी जान ले ली।

जीवन में हमारे साथ भी कई बार ऐसा ही होता है। हम भी भूतकाल के निराशादायक व दुःखद अनुभवों के कारण नकारात्मक विश्वास से ग्रस्त हो जाते हैं। हमें लगता है कि सफलता अथवा आरोग्य हमारी किस्मत में ही नहीं है। अतः प्रयास करना बेकार है। इसी कारण जब सफलता अथवा उन्नति का कोई अवसर हमारे सामने आता भी है तो उसे गुजर जाने देते हैं। क्यों? क्योंकि हमें विश्वास हो जाता है कि पिछले अनुभवों के विपरीत कुछ नहीं हो सकता और समय के साथ ये विश्वास दृढ़ होता जाता है। इस नकारात्मक विश्वास के लिए हमारी कंडीशनिंग हो जाती है। इसी प्रकार के नकारात्मक विश्वासों के कारण ही हम जीवन में आगे नहीं बढ़ पाते अथवा उत्कृष्टता से कोसों दूर रह जाते हैं या व्याधियों का उपचार नहीं करते अथवा दवाएँ नहीं लेते। अब प्रश्न उठता है कि इस स्थिति से उबरने के लिए क्या करें?

इसके लिए हमें अपनी नकारात्मक कंडीशनिंग को तोड़ना पड़ेगा। सबसे पहले तो ये बात मन में बिठानी होगी कि हम पाइक मछली नहीं हैं। पाइक मछली कांच की दीवार को नहीं तोड़ सकती लेकिन हम कांच की दीवार रूपी बाधाओं को आसानी से ध्वस्त कर सकते हैं। रुकावटों को समझना और उन्हें दूर करना ही वास्तविक सफलता है। कई बार कुछ अवरोध लंबे समय तक बने रह सकते हैं लेकिन इसका ये अर्थ कदापि नहीं कि ये अवरोध हटेंगे ही नहीं या इन्हें कभी भी पार नहीं किया जा सकेगा। अवरोध हटने या उन्हें पार करने की संभावना कभी समाप्त नहीं होती। हमें धैर्य के साथ उनके हटने की प्रतीक्षा करने के साथ–साथ उन्हें पार करने के लिए कोशिश करते रहना चाहिए। यदि अत्यधिक विषम परिस्थितियों के कारण हम कुछ अधिक नहीं कर पाते तो उन परिस्थितियों के बदलने पर हमें फौरन सक्रिय हो जाना चाहिए। इसके लिए जरूरी है कि हम सतर्क रहकर घटनाक्रम की पूरी जानकारी रखें।

लोहा गरम होने तक इंतजार करें और जैसे ही लोहा गरम हो जाये उस पर चोट करें अर्थात् जैसे ही परिस्थितियाँ अनुकूल हों हम अपेक्षित प्रतिक्रिया करें। हमारी जो प्रारम्भिक असफलताएँ होती हैं वे असफलताएँ ही हमारी सफलता की नींव के पत्थर बनती हैं, इसलिए जरूरी है कि असफलता की पीड़ा को भुलाकर हर बार नए सिरे से प्रयास करने का निर्णय लें। व्यवसाय हो अथवा सम्बन्ध या स्वास्थ्य अथवा रोगमुक्ति जीवन के हर क्षेत्र में यही बात लागू होती है। पहले जिन लोगों को टीबी अथवा क्षय रोग हो जाता था उसकी मृत्यु निश्चित थी, लेकिन आज इस बीमारी का उपचार न केवल पूरी तरह से सम्भव हो गया है अपितु सरल भी हो गया है।

यदि टीबी अथवा क्षय रोग होने पर हम उस समय का हवाला देकर कहें कि इस रोग का उपचार असंभव था और उपचार न करें अथवा बीच में ही छोड़ दें तो इसके लिए कौन दोषी होगा? हमारा नकारात्मक विश्वास ही इसके लिए उत्तरदायी होगा। कई लोग बड़े जिद्दी होते हैं। उन्हें लाख समझाओ लेकिन कहते रहेंगे कि ये काम तो वे बिल्कुल नहीं कर सकते। ये उनके भूतकाल के निराशादायक व दुःखद अनुभवों के कारण भी हो सकता है। कुछ लोग जीवन में बार–बार धोखा खा चुके होते हैं अतः एक तरह से उनका ये विश्वास ठीक भी है लेकिन ये पूरी तरह से नकारात्मक विश्वास है। इसी नकारात्मक विश्वास के कारण वे अपना दृष्टिकोण बदलने को तैयार नहीं होते और जीवन में अनेक संभावनाओं से वंचित रह जाते हैं। जीवन हमेशा संभावनाओं से पूर्ण होता है लेकिन तभी जब हम भूतकाल के निराशादायक व दुःखद अनुभवों से उत्पन्न नकारात्मक विश्वास को अपने अंदर घर न करने दें।

कुछ व्यक्ति जब कोई नया काम करते हैं अथवा कोई नई चीज करना सीखते हैं तो शीघ्र अपेक्षित सफलता न मिलने पर उसे हमेशा के लिए छोड़ देते हैं। जब हम स्कूटर, कार अथवा अन्य वाहन चलाना सीखते हैं तो शुरू में कई समस्याएँ आ खड़ी होती हैं। कई बार वाहन चलाते समय हड़बड़ी में कुछ गलती भी हो जाती है। सही समय पर ब्रेक नहीं लगा पाते अथवा गाड़ी की गति धीमी नहीं कर पाते। ड्राइविंग सीखते समय छोटी–मोटी दुर्घटना भी स्वाभाविक है। यदि ड्राइविंग सीखते समय कोई छोटी–मोटी दुर्घटना हो जाये तो कई लोग उसी वक्त हाथ खड़े कर देते हैं। उनका तर्क होता है कि उनसे फिर कोई दुर्घटना हो जायेगी। ये उनके नकारात्मक विश्वास के कारण ही होता है। नकारात्मक विश्वास उत्पन्न करने में कई बार हमारे अपने कटु अनुभव उत्तरदायी होते हैं तो कई बार हमारे आस–पास के लोग भी इसके लिए कम उत्तरदायी नहीं होते।

जब हम लोगों से बार–बार सुनते हैं कि ये तुमसे नहीं होगा या ये तुम्हारे करने की चीज नहीं है तो हममें नकारात्मक विश्वास उत्पन्न होने लगता है। नकारात्मक विश्वास के कारण कई बार हम सीखी हुई चीज भी भूल जाते हैं। एक घटना याद आ रही है। एक सज्जन ने अपनी भतीजी को कार चलानी सिखाई। पहले एक प्रसिद्ध ड्राइविंग कॉलेज से ड्राइविंग सिखलाई और बाद में स्वयं पर्याप्त अभ्यास करवाया। लड़की कार चलाने में बहुत अच्छी हो गई और स्वयं अकेले ड्राइविंग करने लगी लेकिन लड़की के पिता प्रायः कहते थे कि जब हमारे पास कार ही नहीं है तो सीखने का क्या फायदा? या कहते थे कि किसी दिन ठोक दी तो लेने के देने पड़ जायेंगे। कुछ दिनों में ही लड़की के अन्दर इतना नकारात्मक विश्वास उत्पन्न हो गया कि वो गाड़ी को छूने से भी डरने लगी। जो भी हो हर प्रकार के नकारात्मक विश्वास की कंडीशनिंग से मुक्ति अनिवार्य है क्योंकि इसका जीवन के हर क्षेत्र में बुरा प्रभाव पड़ता है।

कई बार जीवन में मिली लगातार असफलताओं के बाद व्यक्ति प्रयास करना ही छोड़ देता है, लेकिन तभी अचानक एक दिन उसे बड़ी सफलता मिल जाती है। कई लोग इसे किस्मत से मिली सफलता कहते हैं, लेकिन वास्तव में ये पिछले प्रयासों अथवा असफलताओं के अनुभवों के कारण ही संभव हो पाता है। बहरहाल हमें असफलताओं से घबराकर न तो आगे प्रयास करना छोड़ना चाहिए और न ही असफलताओं को दोष देना चाहिए। जब हम किसी शिलाखंड को तोड़ना चाहते हैं तो उस पर जोर से वार करते हैं लेकिन प्रायः पहले वार में पत्थर नहीं टूटता। हम जब तक पत्थर टूट नहीं जाता उस पर हथौड़ा चलाते रहते हैं और इसका कारण है हमारा सकारात्मक विश्वास कि पत्थर अंततः किसी न किसी वार से अवश्य टूट जायेगा। इसलिए जब तक सफलता नहीं मिल जाती तब तक कार्य बीच में छोड़ने की बजाय निरन्तर प्रयास करते रहना चाहिए। परिणाम मिलते अवश्य हैं लेकिन कई बार देर से मिलते हैं। हमें अपेक्षित परिणाम अथवा सफलता मिलने तक धैर्य के साथ अपने कार्य में जुटे रहना चाहिए। जीवन में हर प्रकार की सफलता के लिए असंभव शब्द को मन रूपी शब्दकोष से डिलीट करना अनिवार्य है। नकारात्मक विश्वास से मुक्ति के लिए हमें इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि यदि दुनिया में कोई भी काम कोई भी व्यक्ति कर सकता है तो हम भी उसे अवश्य कर सकते हैं। नकारात्मक विश्वास से बचने के लिए किसी भी कार्य को सीखने के लिए पर्याप्त अभ्यास करें, कार्य को पूरे मन से करें व मन में पूर्ण विश्वास रखें कि मैं कर सकता हूँ। मैं भी सफलता प्राप्त कर सकता हूँ।

सार्वदेशिक सभा द्वारा चारों दर्शनों एवं संस्कार विधि का पुनर्प्रकाशन

भाष्यकार तर्क शिरोमणि – स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

1. वेदान्त दर्शन – पृष्ठ 232 – मूल्य 100 रुपये
2. वैशेषिक दर्शन – पृष्ठ 248 – मूल्य 100 रुपये
3. न्याय दर्शन – पृष्ठ 240 – मूल्य 100 रुपये
4. सांख्य दर्शन – पृष्ठ 156 – मूल्य 80 रुपये
5. संस्कार विधि – पृष्ठ 278 – मूल्य 90 रुपये

बढ़िया कागज, सुन्दर प्रिंटिंग व आकर्षक टाइटल के साथ 25 प्रतिशत छूट पर सभा कार्यालय में उपलब्ध है।

प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

समाज निर्माण में नारी का उत्तरदायित्व

– डॉ. रघुवीर वेदालंकार

उक्त शीर्षक पर विचार करने के पूर्व हमें यह भी विचार करना होगा कि समाज का क्या अर्थ है, जिसके निर्माण में नारी के दायित्व की अपेक्षा की जाती है व्यक्तियों के समुदाय को समाज कहते हैं। बड़े–बड़े उद्योगों ऊंचे–ऊंचे भवनों तथा अन्य नाना सुख साधनों का नाम समाज नहीं है। निश्चय ही नारी का क्षेत्र आज पहले की अपेक्षा पर्याप्त विस्तृत है जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आज पुरुषों के समान ही गतिशील है। आज वह ऊँचे पदों पर प्रतिष्ठित है। आज वह शिक्षिका है। आज वह डॉक्टर है, इंजीनियर है, वैज्ञानिक है, उद्योगों की संचालिका है, गायिका है, विधानसभा में है, प्रधानमंत्री तथा राष्ट्रपति भी है। जीवन का कोई भी क्षेत्र आज ऐसा नहीं, जहाँ नारी की पहुंच न हो, या उसका योगदान न हो। इतना सब होते हुए भी नारी का मुख्य कर्तव्य उससे छूट गया। इस सब पचड़े में पड़कर या तो नारी को उसकी पूर्ति का अवकाश ही नहीं है, या फिर इस ओर उसका अपेक्षा भाव है। और वह दायित्व है व्यक्ति निर्माण का। यह कार्य अन्य सब की अपेक्षा अति महत्वपूर्ण है। इसी के कारण तो उसे माता का उच्च स्थान मिला था, जिसके विषय में कहा गया है – माता निर्माता भवति। माँ ही उसके बच्चे की वास्तविक निर्मात्री है। इसीलिए तो मां को बच्चे का प्रथम गुरु कहा गया है। 'मातृमान् पुरुषो वेद' का यही अर्थ है। वह जो संस्कार, जो शिक्षा। बच्चे को दे सकती है, विश्व में कोई भी शिक्षणालय तथा मानव नहीं दे सकता। प्रत्यक्ष रुप से देखने में तो यही आ रहा है कि आज नारी को अपने इस महान कर्तव्य का बोध ही नहीं है। आज वह धन एवं नौकरियों के पीछे भाग रही है, जैसे कि पुरुष। कहने को कहा जाता है कि आज नारी पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है, किन्तु इस चलन में उसका स्वरुप बिगड़ गया। नारी, जो सुशीलता, त्याग, तपस्या, लज्जा, सौम्यता, नैतिकता एवं धर्म की प्रतिमूर्ति थी, उसका यह स्वरूप आज तिरोहित होता दिखालायी दे रहा है। इस प्रकार उसका अपना स्वरूप ही स्थिर नहीं रह पा रहा है तो वह मानव का निर्माण कैसे करेगी। इसके लिए उसके पास न समय है, न ही भावना।

इतिहास उठाकर देखें तो सम्पुष्ट है कि मानव के निर्माण में उनकी माताओं तथा पत्नियों ने कितनी भूमिका का निर्वाह किया है। स्वामी विवेकानंद जी से जब अमेरिकन महिला ने यह पूछा कि आपने इस प्रकार की शिक्षा, ऐसे विचार किस शिक्षणालय में प्राप्त किए हैं, मैं भी अपने बच्चों को वहां भेजना चाहती हूं, तो विवेकानन्द उदास होकर बोले वह शिक्षणालय अब टूट चुका है, क्योंकि वह मेरी मां थी। महात्मा गांधी शिक्षा के लिए प्रथम बार विदेश जाने लगे तो उनकी धर्मपरायण माँ ने उनसे प्रतिज्ञा कराई कि वहाँ जाकर (1) शराब नहीं पिओगे, (2) वेश्यागमन से दूर रहोगे। महात्मा गाँधी जी ने दोनों ही पतित कार्यों से पृथक रहकर इस सम्बन्ध में अपनी मां का उपकार माना है। आज, जब मां ही शराब के नशे में धुत रहती है तो वह अपनी संतान को क्या शिक्षा देगी? छत्रपति शिवाजी को सिंहगढ़ के किले की ओर इंगित करके माता जीजा बाई ने कहा था। शिवा, यह किला तुम्हारे पूर्वजों का है, जो इस समय मुगलों के अधिकार में है। शिवाजी तभी प्रतिज्ञा करते हैं कि माँ! मैं यह किला पुनः लेकर रहूँगा। शिवाजी ने अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण भी की। थोड़ा और भूतकाल की ओर देखें तो हमें विदूषी माता मदालसा की याद आती है, जिसने अपने बच्चों को बाल्यावस्थाओं में ही आध्यात्मिक ज्ञान दे दिया कि वे संसार से विरक्त हो गये, वह शिक्षा थी –

शुद्धोऽसि बुद्धोऽसि निरंजनोऽसि।
संसारमायापरिवार्जितोऽसि।।

हे पुत्र! तुम शुद्ध तथा ज्ञान स्वरूप हो। संसार माया से अलग हो। उनके पति राजा थे। राजा ने कहा भगवती! इस राज्य को कौन संभालेगा। तब मदालसा ने एक पुत्र को क्षत्रित्व की शिक्षा देकर राज्य का अधिकारी भी बनाया। आज कितनी माताएं बच्चों को इस प्रकार की उदात्त शिक्षा प्रदान करती हैं। उनके पास ऐसा करने के लिए समय ही कहां है। जब एक महिला प्रातः 8 बजे ही नौकरी रूपी दायित्व की पूर्ति हेतु निकलकर शाम को थकी मांदी घर लौटेगी तथा घर आकर उसे भोजन भी बनाना पड़ेगा तो उसके पास बच्चों की शिक्षा का समय एवं सामर्थ्य ही कहां रह जायेगा। नौकरी, धन तथा उच्च पद प्राप्ति की अपेक्षा संतान का निर्माण बहुत कठिन है, जो कि आज मातृशक्ति ने छोड़ दिया है। नारी का दूसरा कर्तव्य था अपने पति कुल की आन्तरिक गृहव्यवस्था को संभालना। इसके लिए उसे परिवार के प्रति अपने को समर्पित कर देना होता था। इस समर्पण भाव को दर्शाते हुए अथर्ववेद में कहा गया है कि एक नववधु पतिकुल में जाकर वहां पूर्णतः इस प्रकार विलीन हो जाए, जैसे कि एक नदी समुद्र में लीन हो जाती है। वह परिवार की अभिवृद्धि में, पारिवारिक जनों की उन्नति सहयोग दें, उसका यही धर्म है। यहां प्रगतिवाद प्रश्न करते हैं कि इस तरह तो नारी का क्षेत्र संकुचित हो जायेगा। उसकी क्षमताओं का क्या लाभ होगा। शिक्षा को प्राप्त करके भी एक नारी घर में संतान उत्पन्न करके उन्हें संभालती रहे तथा परिवार की सेवा करती है, तो उसकी शिक्षा का क्या लाभ? जो लोग ऐसा प्रश्न करते हैं, वे नहीं जानते कि शिक्षा का अर्थ क्या है? शिक्षा का अर्थ व्यक्ति का सम्पूर्ण विकास करना है। उसे पशुत्व से मनुष्यत्व की ओर ले जाना है। शिक्षा का उद्देश्य नौकरी या धन कमाना नहीं है, अपितु जीवन निर्माण करना है। आज यही तो भूल हो रही है कि शिक्षा को रोजगार से जोड़ा जा रहा है। प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति रोजगार चाहता है। वह इसे अपना अधिकार समझता है तथा रोजगार के अभाव में सरकार से भत्ते की आशा करता है। सरकार भला इतने रोजगार, इतनी नौकरियाँ कहां से लायेगी। शिक्षा इसलिए थी कि, शिक्षित होकर, शिक्षा के द्वारा अपने मन तथा मस्तिष्क का पूर्ण विकास करके व्यक्ति किसी भी काम में लग जाए, वहीं सफल होगा। शिक्षा के बिना एक अच्छा व्यापारी, अच्छा दुकानदार, अच्दा राजनेता, अच्छा समाजसेवक नहीं बना जा सकता। यहां तक कि अशिक्षित अनुष्य तो खेती भी ठीक प्रकार से नहीं कर सकता। आजीविका के लिए कोई भी कार्य करने में कोई हानि नहीं है।

आज तो महिलाओं को नौकरी के बिना संतोष नहीं। यह गलत धारणा है। एक शिक्षित महिला ही घर को उत्तम रीति से चला सकती है। वही बच्चों को भी सुशिक्षा तथा सुसंस्कार प्रदान कर सकती है, अशिक्षित महिला नहीं। घर चलाने के लिए पाकविद्या का भी ज्ञान होना चाहिए। सामान्य रोग एवं उसके उपचार की जानकारी उसे होनी चाहिए। अर्थशास्त्र का ज्ञान भी आवश्यक है, तभी तो वह घर की अर्थव्यवस्था को रख सकेगी। पैसा कमाना तथा नौकरी करना ही नारी का धर्म नहीं है, अपितु घर को संभालना भी उसका दायित्व है। इसलिए उसका एक नाम गृहणि भी है। उसकी सेवा, त्याग, तपस्या के बल पर ही तो पूरे परिवार की उन्नति हो रही है। वह इसमें सहयोगिनी है। इसलिए परिवार की उन्नति का श्रेय उसे भी जाता है।

हम भामती नामक एक त्यागमयी नारी का उदाहरण सुनते हैं कि उसके पति वेदान्तशास्त्र के शांकर भाष्य पर टीका लिखने में इतने तल्लीन हो गये कि अपने गृहस्थधर्म का भी पालन न कर सके। भामती चुपचाप उनकी सेवा करती रही। ग्रंथ की समाप्ति पर उधर से ध्यान हटा तो भामती का त्याग, तपस्या, सहयोग देखकर उनके पति इतने अभिभूत हुए कि उस टीका का नाम ही भामति रख दिया। शायद आज ग्रंथकर्ता का नाम कोई जाने न जाने, किन्तु भामति का नाम सब जानते हैं। वह अपने त्याग तथा सेवा से अमर हो गयी, क्योंकि उस ग्रंथ के लिखने में उसका भी सहयोग था। इतनी प्रसिद्धि तो उसे पृथक से कोई ग्रंथ लिखकर भी नहीं मिलती। इसलिए यह भ्रम दिल से निकाल देना चाहिए कि परिवार की सेवा करके स्त्री का क्षेत्र संकुचित हो जायेगा, या उसकी शक्तियाँ निरर्थक हो जायेंगी। आजकल भी ऐसी माताएं मिल जायेंगी जो योग्य होते हुए भी स्वयं नौकरी न करके अपनी क्षमताओं को उपयोग अपनी संतानों को सुयोग्य बनाने में करती हैं। यहां पर दिल्ली के रामजस कॉलेज के वनस्पति विभाग के पूर्व प्राध्यापक डॉ. एम. पी. जैन का उदाहरण दिया जा सकता है, जो गर्व से कहते हैं कि मैंने अपनी धर्मपत्नी को नौकरी इसलिए नहीं कराई कि इनके कारण ही हमारे तीनों लड़के डॉक्टर हैं। एक माता के लिए यह क्या कम उपलब्धि है? इस त्याग तपस्या से उसका यश अक्षुण्ण है। दूसरा उदाहरण भी इसी कॉलेज के दूसरे प्राध्यापक का है, जिनकी धर्मपत्नी भी किसी कॉलेज में प्राध्यापिका हैं। धन पर्याप्त है, किन्तु वे पश्चाताप के स्वर में स्वीकार करते हैं कि पत्नी को नौकरी कराना संतानों एवं स्वयं उनके भी हित में नहीं रहा।

वर्तमान काल की व्यापक एवं गम्भीर समस्या है कि आज बच्चे संस्कारविहीन एवं उच्छृंखल होते जा रहे हैं। यहां तक कि माता–पिता का सम्मान भी वे नहीं करते, जिस कारण वृद्धावस्था में माता–पिता को परिवार से अलग भी कर दिया जाता है, तथा अन्य भी अनेक कष्ट भोगने पड़ते हैं। यह समस्या अशिक्षित लोगों में कम, शिक्षित समुदाय में विशेषकर शहरों में अधिक है। इसलिए भारत में भी वृद्धाश्रम की परम्परा जन्म लेती जा रही है। यह पाश्चात्य संस्कृति की ही देन है, तथा माता–पिता द्वारा संतानों को घर पर बाल्यावस्था में सुशिक्षा न दिये जाने का ही परिणाम है।

वैदिक संस्कृति में नारी को बहुत ऊँचा स्थान दिया गया है। उसे वेद में स्योना, सुशेवा, सुमंगली, प्रतारणी, कहा गया है। वह पूरे घर की सेवा करने वाली, उसके कष्टों को दूर करने वाली तथा घर को पार लगाने वाली, उसकी स्वामिनी है। प्राचीन शास्त्रों में पत्नी पर कहीं भी धन कमाने का दायित्व नहीं डाला गया।

अतीत में महिलाओं के अधिकारों को सीमित करके उन पर अनेक प्रतिबन्ध लगा दिये गये। यह स्त्री जाति के साथ अन्याय था, अत्याचार था। महर्षि दयानन्द तथा अन्य समाज सुधारकों के प्रयासों से उस दशा में परिवर्तन आया तथा आज महिला पूर्णतः स्वतंत्र है। उसे पुरुषों के समान ही सब अधिकार प्राप्त है, किन्तु प्रतीत होता है कि अनेक महिलाओं ने इस स्वतंत्रता का दुरुपयोग करके अपनी जीवनशैली को ही बदल डाला है। स्त्री–पुरुष की अपेक्षा अधिक शालीन, सात्विक तथा धर्मपरायण होती थी। पुरुषों के दोष उनमें नहीं होते थे, किन्तु आज के वातावरण में, आज भौतिकवाद ने, नौकरीवाद ने वे सभी दोष महिलाओं में उत्पन्न कर दिये, जो कि उनको पतन की ओर धकेल रहे हैं। किसी ऊँचे पद को प्राप्त करके आज महिला भी रिश्वत लेती है, भ्रष्टाचार के अनुचित तरीके अपनाती है। वह अपने पुरुष मित्रों के साथ बैठकर शराब पीती है। सिगरेट पीना तो उनके लिए आम बात हो गयी है। अनेक घोटालों में किसी पद पर प्रतिष्ठा सुशिक्षित महिला का भी सहयोग रहता है। अनेक महिलाएं जेब काटते हुए भी पकड़ी गयी हैं। दिल्ली पुलिस की नारकोटिक्स शाखा के उपायुक्त श्री डी.एल. कश्चयप के अनुसार उनकी शाखा 1999 से अब तक 32 महिलाओं को मादक द्रव्यों के मामलों में गिरफ्तार कर चुकी हैं। एक पुलिस अधिकारी के अनुसार 1985 में मादक द्रव्य निरोधक कानून बनने के उपरान्त अफीम–गांजा बेचने वाले कई आपरेटरों ने ज्यादा मुनाफा देने वाले स्मैक जैसे पदार्थों पर अपना ध्यान केन्द्रित कर दिया। 'नवभारत टाइम्स' का यह निष्कर्ष चौंका देने वाला है कि दिल्ली में स्मैक, चरस, हशीश, गांजा आदि नशे की दवाओं की आपूर्ति में आधी संख्या महिलाओं की है। इस व्यवसाय में वे स्वयं को स्थापित कर चुकी हैं। क्या यही समाज निर्माण है, जिससे महिलाएँ अपना योगदान देकर एवं राष्ट्र पतन के गर्त में धकेल रही हैं।

न केवल इतना ही, अपितु पाश्चात्य संस्कृति आज नारी पर, विशेषकर उच्चशिक्षा प्राप्त युवतियों इस रूप में सवार हैं कि आज अपनी सभी मर्यादाओं का अतिक्रमण कर दिया है। आज उसकी मान्यताएँ बदल गयी हैं। बिना विवाह ही पुरुष के साथ रहने, तथा सन्तोनोत्पत्ति को आज प्रगतिशील महिलाएँ अपना रही हैं। आज शिक्षित लड़कियाँ भूख–प्यास के समान ही काम को भी केवल शारीरिक आवश्यकता बतलाकर किसी भी पुरुष के साथ यौन सम्बन्ध स्थापित करने में परहेज नहीं करती। यह स्त्री जाति के पतन की पराकाष्ठा है। इससे तो समाज अधःपतन की ओर ही जायेगा। वेद में कहा गया है –

'मा ते कशप्लकौहशन् सन्तरा पादकौ हर' अर्थात् स्त्री को पैर के टखने तक अपने शरीर को ढककर रखना चाहिए, किन्तु आज शिक्षित नारियों में, विशेषकर अभिनेत्रियों में तो नग्न प्रदर्शन की होड़ लगी है। जो भी जितना भी अधिक नग्न प्रदर्शन कर सके, वह उतनी ही सफल अभिनेत्री है। जब वह स्वयं ही नग्न होने में गौरव अनुभव कर रही है तो अखबारों तथा विज्ञापनों से स्त्री के नग्न या अर्धनग्न चित्रों पर उसे क्या आपत्ति हो सकती है। यदि इसी को सामाजिक उन्नति तथा स्वतंत्रता कहते हैं तो पतन का मार्ग और क्या होगा?

समाज के निर्माण में महिलाओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका से इंकार नहीं किया जा

शेष पृष्ठ 6 पर

माता चन्दकौर की स्मृति में खटकड़ गांव में वैदिक सत्संग का कार्यक्रम भव्यता के साथ सम्पन्न

आर्य समाज सप्तक्रांति के मुद्दों पर कार्य करके सभ्य समाज की स्थापना करेगा – स्वामी आदित्यवेश

समाज में जन्मना जाति व्यवस्था कोढ़ के समान है – बहन मुकेश आर्या

मनुष्य की पहचान जन्म के आधार पर नहीं अपितु कर्म के आधार पर होनी चाहिए – बहन कल्याणी आर्या

खटकड़ गांव में माता चन्दकौर की स्मृति में वैदिक सत्संग का आयोजन किया गया। जिसमें आर्य जगत के विद्वान संन्यासी तथा भजनोपदेशक पहुंचे। जिनका आयोजकों ने स्वागत किया। स्वागत के बाद कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय महासचिव युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी ने कहा कि आर्य समाज का सप्तक्रांति अभियान समाज में फैली समस्त समस्यायों का समाधान है। उन्होंने कहा कि आर्य समाज की पहल पल प्रारम्भ किया गया यह कार्यक्रम समाज के विभिन्न सामाजिक व धार्मिक संगठनों के साथ चलाने की योजना है। यह एक न्यूनतम साझा कार्यक्रम है जिसके आधार पर समाज के संगठन केवल उन मुद्दों पर कार्य करेंगे जिन पर सभी की सहमति होगी। सप्तक्रांति के मुद्दों से एक नए समाज की स्थापना संभव होगी। जिसमें साम्प्रदायिकता मुक्त समाज, जातिवाद मुक्त समाज, नारी उत्पीड़न मुक्त समाज, भ्रष्टाचार मुक्त समाज, अंधविश्वास मुक्त समाज, नशा मुक्त समाज तथा शोषण मुक्त समाज है।

हिसार से पहुंची सुप्रसिद्ध भजनोपदेशिका बहन कल्याणी आर्या ने अपने उद्बोधन में कहा कि कोई व्यक्ति जन्म से नहीं बल्कि अपने कर्म से बड़ा होता है। आज समाज में किसी व्यक्ति को जन्म के आधार पर छोटा बड़ा माना जाता है। उसका परिणाम है समाज का आपसी ताना बाना कमजोर होता जा रहा है। समाज को मजबूत व सशक्त बनाने के लिए कर्मों के आधार पर व्यक्ति का मूल्यांकन होना चाहिए।

सार्वदेशिक आर्य युवती परिषद् हरियाणा की प्रधान बहन मुकेश आर्या ने कहा कि समाज में फैले जातिवाद, साम्प्रदायिकता को एक झटके से खत्म करना पड़ेगा तभी एक आदर्श समाज की स्थापना होगी। आज के समय में जातिवाद व साम्प्रदायिकता देश के लिए सबसे बड़ी चुनौती है।

परिषद् के प्रदेश महासचिव श्री अशोक आर्य ने व्यक्तित्व विकास के सन्दर्भ में सारगर्भित जानकारी देते हुए कहा कि स्वयं पर विश्वास रखो, आपके अन्दर वो ताकत है जो आपको कामयाबी के शिखर पर ले जा सकती है। शिक्षित एवं संस्कारित नारी ही मानव का निर्माण कर सकती है। ऋषि दयानन्द जी ने सबसे पहले महिला अधिकारों की वकालत की थी। आज भी आर्य समाज बहनों के मान सम्मान व स्वाभिमान की लड़ाई लड़ता रहता है।

नशा मुक्ति अभियान के प्रदेश अध्यक्ष स्वामी रामवेश जी ने 10 दिसम्बर को जींद में आयोजित होने वाले आर्य महासम्मलेन का निमंत्रण दिया। कार्यक्रम का संचालन श्री भगत सिंह युवा परिषद् के अध्यक्ष श्री वीरेंद्र पहलवान ने किया। इस अवसर पर गांव के सरपंच श्री सतबीर सिंह, श्री राकेश आर्य, श्री अजीतपाल, श्री मांगेराम खटकड़, श्री जे. पी. खटकड़ के अतिरिक्त सैंकड़ो गणमान्य महानुभाव उपस्थित रहे।

पृष्ठ 1 का शेष

आर्य जगत् के तपस्वी युवा संन्यासी स्व. स्वामी श्रद्धानन्द जी की प्रथम पुण्यतिथि पर विशाल प्रेरणा सभा का आयोजन

बनाने का कार्य करेंगे तथा वेद के प्रचार–प्रसार में अपना जीवन समर्पित करके उनके अधूरे कार्यों को पूरा करने का कार्य करेंगे यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल आर्य ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी वह व्यक्तित्व थे जो हरियाणा में शराबबन्दी आन्दोलन में संघर्षशील कार्यकर्ताओं और नेताओं में उनका नाम अग्रणी पंक्ति में आता है। वे सदैव अन्याय के खिलाफ न केवल आवाज उठाते थे बल्कि आवश्यकता पड़ने पर आन्दोलन करके जेल भी जाने से नहीं डरते थे।

महात्मा वेदपाल आर्य जी ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज हरियाणा के सामाजिक आन्दोलनों में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेते थे और समाजोपयोगी कार्यों के लिए सदैव उपस्थित रहते थे। स्वामी श्रद्धानन्द जी को मैं अपनी ओर से विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

मानव सेवा प्रतिष्ठान के कार्यकारी अध्यक्ष श्री रामपाल शास्त्री जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को अपने संगठन की ओर से श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि स्वामी जी महाराज बहुत ही जुझारू व्यक्तित्व थे। उन्होंने अपना पूरा जीवन युवाओं को प्रेरित करके समाज निर्माण में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

पूर्व विधायक श्री रघुवीर सिंह तेवतिया ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को युवा निर्माण का एक मजबूत प्रहरी बताया। स्वामी श्रद्धानन्द जी का स्वभाव अत्यन्त हंसमुख था।

कांग्रेस नेता श्री विजय प्रताप ने श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी एक समर्पित व्यक्तित्व थे। वे सदैव समाज के लिए जागरूकता अभियान चलाने में संलग्न रहे।

स्थानीय विधायक श्री दीपक मंगला ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी पलवल, फरीदाबाद क्षेत्र की शान थे और आर्य समाज के कार्यों को पूरी निष्ठा के साथ किया करते थे। वे जब भी मिलते थे तो हमेशा हंसकर मिलते थे। जो उनकी विशेष पहचान थी।

कुंवर रमेश राणा ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को स्मरण करते हुए कहा कि स्वामी जी ने हमारे जैसे कितने ही नवयुवकों को आर्य समाज से जोड़ा और वे हमारे प्रेरणा स्रोत बनकर रहे। स्वामी जी जितना कार्य इस क्षेत्र में करके गये उतना किसी और व्यक्ति ने किया हो मुझे दिखाई नहीं देता।

कार्यक्रम के संयोजक नैष्ठिक ब्रह्मचारी राजदेव आर्य ने इस अवसर पर घोषणा की कि वे जनवरी, 2024 में संन्यास की दीक्षा लेकर स्वामी श्रद्धानन्द जी को सच्ची श्रद्धांजलि देंगे। उन्होंने कहा कि स्वामी जी मेरे मार्ग दर्शक एवं प्रेरणा के स्रोत थे और उनके साथ रहकर मैंने बहुत कुछ सीखा जिससे मुझे सामाजिक कार्य करने की सही दिशा मिली।

कार्यक्रम के अन्त में आर्यजनों के लिए भोजन की व्यवस्था की गई थी जिसे सभी ने ग्रहण किया और कार्यक्रम सफलता के साथ सम्पन्न हो गया।

संघर्षशील, कर्मठ समाजसेवी, आर्यनेता श्री राम सिंह आर्य जी की

तृतीय पुण्यतिथि पर हजारों लोग उपस्थित हुए

स्व. श्री रामसिंह आर्य आजीवन समाज सेवा के लिए संघर्षरत रहे – स्वामी आर्यवेश

समाज में फैली कुरीतियों के खिलाफ आजीवन कार्य करते रहे आर्य जी – बिरजानन्द एडवोकेट

पूज्य पिता जी द्वारा दिखाये गये मार्ग पर चलकर समाज के लिए कार्य करना मेरा लक्ष्य – मनीषा पंवार

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के उपमंत्री तथा आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के कार्यकारी प्रधान, आर्य वीरदल राजस्थान के प्रदेशाध्यक्ष और विभिन्न आन्दोलनों से जुड़े प्रसिद्ध समाजसेवी आर्य नेता स्व. श्री राम सिंह आर्य की तृतीय पुण्य तिथि के अवसर पर 2 नवम्बर, 2023 को गौरव पथ रोड पर स्थित गांधी शांति प्रतिष्ठान, जोधपुर में प्रेरणा सभा का आयोजन आर्य वीर दल जोधपुर, राजस्थान के तत्वावधान में किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द एडवोकेट, जोधपुर शहर की विधायक बहन मनीषा पंवार जी सहित अनेक संगठनों के प्रतिनिधि तथा समाजसेवी गणमान्य महानुभाव स्व. श्री रामसिंह आर्य को श्रद्धांजलि देने के लिए कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। प्रेरणा सभा के अवसर पर शांति यज्ञ का कार्यक्रम रखा गया था जिसके मुख्य यजमान के रूप में श्रीमती मनीषा पंवार एवं श्री दीपक पंवार (राम सिंह जी की बड़ी बेटी), श्रीमती हिमांशी आर्या एवं श्री अमित (राम सिंह जी की छोटी बेटी), श्री कुलदीप सिंह एवं भावना आर्या ने अग्निहोत्र में आहुतियाँ दी। यज्ञ का सम्पादन श्री चेनाराम आर्य ने किया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी ने कर्मठ, संघर्षशील, विचारक एवं क्रांतिकारी समाजसेवी आर्य नेता स्व. श्री राम सिंह आर्य जी की तृतीय पुण्य तिथि के अवसर पर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि उन्होंने अपने सद्कर्मों के माध्यम से जीवन–पर्यन्त मानवता की सेवा कर मनुर्भव का बहुत सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत किया। संघर्षशील व्यक्तित्व के धनी स्व. श्री रामसिंह आर्य ने जीवन–पर्यन्त महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा दिखाये गये मार्ग पर चलते हुए कार्य किया। उन्होंने आर्य समाज द्वारा चलाये गये अनेकों आन्दोलनों जैसे सती प्रथा आन्दोलन, बंधुआ मजदूरों की मुक्ति का आन्दोलन, नाथद्वारा मंदिर प्रवेश आन्दोलन, कन्या भ्रूण हत्या विरोधी आन्दोलन, शराबबन्दी जैसे अनेकों आन्दोलनों में सक्रिय भूमिका निभाई थी। श्री राम सिंह आर्य जी युवाओं के प्रेरणास्रोत थे, वे कुशल संगठक एवं जुझारू आर्यनेता थे। उन्होंने जातिवाद, छुआछूत व भेदभाव मिटाने के लिए कठिन संघर्ष किया था। वे एक लेखक, ओजस्वी वक्ता तथा आर्यनेता के रूप में प्रसिद्ध थे। उन्होंने राजस्थान में आर्य युवा संगठन को मजबूत बनाने में अपनी सक्रिय भूमिका निभाई। आज वे हम सबके बीच भले ही नहीं हैं परन्तु उनके द्वारा किये गये कार्यों को कभी भी भुलाया नहीं जा सकता। उनके तप, त्याग, समर्पण एवं कर्मठता का जीता जागता उदाहरण है कि आज उनकी सुयोग्य सुपुत्री मनीषा पंवार राजस्थान में जोधपुर शहर से विधायक हैं और प्रदेश सरकार में उनकी सक्रिय भागीदारी है। बहन मनीषा पंवार अपने क्षेत्र में खूब कार्य कर रही हैं और उनकी कर्त्तव्य निष्ठा एवं राजनीति में सक्रियता को देखते हुए उन्हें दुबारा जोधपुर शहर से चुनाव लड़ने का टिकट भी मिल गया है। स्व. श्री राम सिंह आर्य अपने प्रेरणास्रोत कर्मयोगी स्व. श्री मदन सिंह आर्य से प्रेरित होकर आर्य वीरदल के कार्य में जुटे और बाद में स्वामी अग्निवेश जी और स्वामी इन्द्रवेश जी के नेतृत्व में आर्य समाज के कार्य को पूरी निष्ठा के साथ आगे बढ़ाया। ऐसे महान आर्य नेता से हम सबको प्रेरणा लेकर समाज एवं राष्ट्र के लिए कार्य करने की आवश्यकता है, यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द एडवोकेट ने अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए कहा कि श्री राम सिंह आर्य जी हमेशा हम सबको याद आते रहेंगे। वे सामाजिक बुराईयों के खिलाफ आन्दोलनों में बढ़–चढ़कर भाग लिया करते थे तथा राजस्थान में युवाओं को आर्य वीरदल के माध्यम से संस्कारित करके महर्षि दयानन्द जी के सपनों को पूरा करने का आजीवन प्रयास करते रहे।

प्रेरणा सभा के दौरान भजनों के माध्यम से श्री विक्की मनचला एवं 'रूप' ने भजनों का कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

कर्मवीर स्व. श्री रामसिंह आर्य जी की प्रेरणा सभा से पूर्व रावणा राजपूत समाज की ओर से पाल रोड मसुरिया स्थित शिव प्याऊ बगेची में 151 किलो का शुद्ध हलवा बनाकर गायों को खिलाया गया।

प्रेरणा सभा में जालौर, शिवगंज, पॉली, बालोतरा आदि स्थानों से भी आर्य वीर बड़ी संख्या में पधारे हुए थे। जिन महानुभावों की विशेष उपस्थिति रही उनमें राजस्थान सभा के उपप्रधान श्री नारायण सिंह आर्य 'सर', आर्य वीरदल राजस्थान के अधिष्ठाता श्री भंवरलाल आर्य, आर्य वीरदल राजस्थान के अध्यक्ष श्री चांदमल आर्य, आर्य वीरदल राजस्थान के मंत्री श्री जितेन्द्र सिंह आर्य, आर्य वीरदल जोधपुर के अध्यक्ष श्री हरि सिंह आर्य व संचालक श्री उम्मेद सिंह, श्री दलपत सिंह आर्य एवं श्री विनोद आर्य जालौर, श्री हरदेव आर्य, श्री मदन आर्य एवं श्री जितेन्द्र आर्य शिवगंज, श्री गणपत सिंह आर्य, श्री मदन गोपाल आर्य, श्री शिव प्रकाश सोनी, श्री विरेन्द्र मेहता, श्री गजे सिंह भाटी, श्री पूनम सिंह शेखावत, श्री दीपक पंवार, डॉ. लक्ष्मण सिंह आर्य, आर्य वीर श्री किशोर सिंह, आचार्य विक्रम सिंह, श्री विक्रम सिंह, श्री द्वारका दास आर्य, श्री हेमन्त शर्मा, श्री भंवरलाल हठवाल, श्रीमती लीला भाटी, श्रीमती हिमांशी आर्या एवं उनकी आर्य वीरांगना दल की सभी सदस्य, श्री आजम जोधपुरी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। पुण्य तिथि के इस महत्त्वपूर्ण आयोजन में स्वामी आर्यवेश जी का विशेष उद्बोधन एवं प्रेरणादायक प्रवचन रखा गया था जिससे सुनने के लिए हजारों की संख्या में लोग उपस्थित हुए और उन्होंने स्व. श्री रामसिंह आर्य को स्मरण किया। स्वामी जी ने सभी को रामसिंह आर्य के जीवन से प्रेरणा लेने का संकल्प भी दिलवाया। स्व. श्री रामसिंह जी की सुपुत्री मनीषा पंवार ने सभी लोगों से व्यक्तिगत रूप से भेंटकर धन्यवाद ज्ञापित किया और आये हुए बुजुर्ग लोगों से आशीर्वाद लिया। कार्यक्रम के उपरान्त सहभोज की सुन्दर व्यवस्था की गई थी। लगभग तीन घंटे चले इस कार्यक्रम में आर्य वीरदल के समस्त कार्यकर्ताओं ने अपनी पूरी निष्ठा के साथ व्यवस्था का दायित्व संभाला और आगन्तुक लोगों का भावनापूर्ण तरीके से आतिथ्य किया।

यदि हम ऋषि भक्त हैं तो वेदज्ञान का दीप जलायें, पाखण्ड तिमिर को दूर भगायें

— डॉ. दिवाकर आचार्य

शारदीय नव संस्येष्टि पर्व दीपावली प्रकाश पर्व के रूप में मनाया जाता है। दीपावली महर्षि दयानन्द की पुण्य तिथि है। महर्षि के निर्वाण को 135 वर्ष हो गये महर्षि ने विश्व में फैले विकट पाखण्ड को ध्वस्त करने के लिये अपना अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश हमारे हाथों में दिया था और संसार के समस्त साम्प्रदायिक अवैदिक मत पन्थों को उखाड़ फेंकने का अभियान चलाया था। परमात्मा ने वेदज्ञान का विराट सूर्य ज्ञान के प्रकाश के लिये विश्व की मानवता को दिया और उसके प्रचार प्रसार का काम भारत के ऋषि–मुनियों एव चक्रवर्ती सम्राटों को सौंपा। किन्तु महान खेद का विषय यह रहा कि आर्यों के आलस्य, प्रमाद एवं कलह के कारण वेद ज्ञान के उस प्रचण्ड सूर्य पर काली घटायें छाने लगी। जब तक वैदिक ज्ञान का प्रकाश भूमण्डल पर फैलता रहा विश्व में सुख शांति एवं प्रेम का पारावार बहता रहा। क्योंकि वेद का सन्देश था ''सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया'' वेद ने सन्देश दिया ''मित्रस्य चक्षुशा समीक्षामहे हम प्राणी मात्र को मित्र की दृष्टि से देखें। ''अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्, उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्'' यत्र विश्वम् भवत्येकनीडम्। जहाँ विश्व की मानवता के लिये संसार एक घोंसला है जहाँ सारे प्राणी प्रेम भाव से रहते थे। किन्तु वेदज्ञान के प्रकाश के अवरूद्ध हो जोने से मत–मतान्तरो के पाखण्ड का अंधेरा फैल गया। जो भारत में बाद में गहराता ही गया।

ईसायत, इस्लाम, यहूदी सम्प्रदाय, बौद्ध एवं जैन सम्प्रदाय और भारत का पौराणिक पाखण्डवाद जैसी न जाने कितनी अवैदिक मान्यताओं ने विश्व की मानवता को ईर्ष्या, द्वेष, कलह एवं युद्धो की विभीषिका में झोंक दिया। आतंकवाद एवं भ्रष्टाचार समाज की शांति और सौहार्द्र को भंग कर रहे हैं। आज विश्व बारूद के ढेर पर बैठा है। परमाणु अस्त्रों की होड़ ने मानवता के लिये भीषण खतरों की पृष्ठभूमि तैयार कर दी है। ये सब वैदिक ज्ञान के अभाव का ही परिणाम ही तो है महर्षि ने इसलिए कहा–

''मनुष्य जन्म का होना सत्यासत्य का निर्णय कराने के लिये है न कि वादविवाद और विरोध करने के लिये। इसी मतमतान्तर के विवाद से जगत में जो जो अनिष्ट फल हुए, होते हैं और आगे होगें उसको पक्षपातरहित विद्धान जन जान सकते है।'' (सत्यार्थ प्रकाश–अनुभूमिका)

महर्षि के इस कथन की साक्षी के लिये विश्व इतिहास से भरा पड़ा है। आर्यों के पास कोई वैदिक धर्मी चक्रवर्ती शासक तो है नही जो इन घोर आतंकवादी स्वार्थी भ्रष्ट मत–मतान्तरों को रोक सके। अपने देश में ही पाखण्ड की कोई कमी नही है। सारे भारत को मानों पौराणिक पाखण्डवाद के झूठे किस्से कहानियों ने और मुक्ति दिलाने के झूठे प्रलोभनो ने जकड़ रखा है। करोड़ो मनुष्य गंगा स्नान से मुक्ति पाने के लिये कुम्भ के नाम पर भारत की नदियों के किनारे कल्पित झूठे तीर्थों पर इकट्ठे होकर हरिद्वार जैसे नगरों और गंगा जैसी पवित्र नदियों को प्रदूषित करते हैं। पाखण्डी पंडे पुजारियों की बड़ी चाँदी होती है क्या ये नरनारी जो गंगा में डुबकी लगाते है मुक्त हो जाते हैं ? कांवड़ का एक पाखण्ड देश के करोड़ो भोले भाले लोगो को बहकाकर कठोर परिश्रम कराता है। सड़को पर इतनी भीड़ होती है कि उत्तर पश्चिम भारत के कई नगर मेरठ मुजफ्फरनगर, मोदीनगर, मुरादनगर, गाजियाबाद आदि सप्ताह भर तक चलने फिरने को दुखी हो जाते हैं। भारत के लाखों मंदिरों में पत्थर के खिलौनो की पूजा होती है ये भोले भाले लोग भारतवासी इस विज्ञान के युग में भी नही समझ पाते कि पत्थर न खाता हैं और न पीता है। और भी ना जाने कितने पाखण्ड मूर्ति पूजा एवं अवतारवाद के कारण भारत में चल रहे हैं, और हम आंख बन्द किये हाथ पर हाथ धरे बैठे रहते हैं। इस पाखण्ड से बड़े दुष्ट दुराचारी धर्माचार्यो का उदय होता रहा है, आशाराम 'बापू', राम रहीम और रामपाल तो इसके ताजे उदाहरण हैं। जब इन दुष्ट दुराचारियों के काले कारनामें खुलते हैं तो इनकी अन्धभक्त जनता ठगी सी रह जाती है। इनके काले कारनामे देखकर भी जनता इस पाखण्ड से विरत नहीं हो रही। क्योंकि घर में बचपन से पाखण्ड एवं मूर्ति पूजा के संस्कार बच्चों में डाल दिये जाते है। वेद में इस पाखण्ड के लिये कोई स्थान नहीं है। फिर हम क्यों इसका विरोध नहीं करते। इसका मूल कारण है हम स्वयं नास्तिक हैं और अकर्मणयता के जाल में फंसे हैं। हमारे बच्चों को न तो वैदिक संस्कार दिये जाते हैं और न हमारे घरों में वैदिक उपासना पद्धति संन्ध्या और यज्ञ की स्थापना हो पाई है। ऐसे लोगों में दूसरे जो कुछ धर्म के नाम पर करते रहे हैं उनसे कुछ कहने का साहस कैसे हो सकता है? मेरे अत्यन्त पूज्य मेरी पी.एच.डी. के निदेशक स्वामी धर्मानन्द सरस्वती ने सन् 1974 में हरिद्वार के कुम्भ मेले के समय कहा था कि ''देखो पौराणिकों में पोप लीला है और आर्य समाज में लोप लीला है''

यह पाखण्ड देश और दुनिया के लिये अत्यन्त घातक और मानवता के लिये दुखदायी है। क्योकि पाखण्ड ने सच्चे वैदिक धर्म की मान्यताओं को लुप्त कर दिया है। जहां वैदिक धर्म, साधना सदाचार, योग ध्यान एवं तप की बात करता है व्यक्ति को धर्म की शिक्षा देकर योगी एवं मुमुक्षु बनाता है वहां पौराणिक पाखण्डी कहता है कि तप सदाचार की आवश्यकता क्या है ? ''कलयुग केवल नाम अधारा'' अरे कलयुग में तो नाम जप से ही मुक्ति हो जाती है वह भी राम और कृष्ण का नाम जपने से। ज्यादा करो तो राधे राधे जप लो। मनुष्य को कितना दिग्भ्रान्त एवं पथ भ्रष्ट किया जाता है।

यह पाखण्ड सारे देश में बहुत गहरी जड़े जमा चुका है और वर्तमान सत्ता के सहारे और तेजी से बढ़ रहा है। एक दिन ऐसा आयेगा कि हम कहीं भी इस पाखण्ड के खिलाफ मुँह भी नही खोल पायेंगे। सार्वदेशिक सभा के पूर्व प्रधान एवं विश्व विख्यात संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी के साथ जो हिन्दू मतावलम्बी पाखण्डियों ने किया वह क्या आपसे छिपा है? इसलिये सावधान होने की आवश्यकता है और पाखण्ड को जड़ से उखाड़ने के लिये कमर कसने की जरूरत है। महर्षि दयानन्द ने पाखण्ड के खण्डन के लिये हरिद्वार कुम्भ में पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराई थी और 17 नवम्बर 1869 ई0 को पाखण्ड के गढ़, बनारस में शास्त्रार्थ कर पाखण्ड और पाखण्डियों का मानमर्दन किया था।

इसलिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि भारत की जनता को इस घिनौने झूठे विषैले अधर्म एवं अपने ही श्री कृष्ण जैसे योगी महापुरुषों जैसे पूर्वजो के चरित्र को बिगाड़ने वाली श्रीमद् भागवत पुराण जैसी कथाओं को बन्द करें एवं वेद की कथाओं का प्रचलन करें।

— पूर्व उपकुलपति गुरूकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन
शंकर विहार लाल कुँआ, गाजियाबाद
मो0 : 9911728170

गौरवमय वैदिक संस्कृति

वेदों की गौरवमय महिमा का विस्तार है,
भारतीय वैदिक संस्कृति संस्कारों का सार है।
जहाँ संस्कारों से हम सबको मिलती श्रेष्ठतम पहचान है,
भारतीय वैदिक संस्कृति सर्वत्र महान् है।
महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश का ज्ञान हमें बतलाता है,
समाज में संस्कारी पहचान तथा मान–सम्मान दिलाता है।
वैदिक शिक्षाएँ हमें अच्छा जीवन जीने की कला बतलाती है,
सन्मार्ग पर चलने के लिए मार्ग दर्शक की भूमिका निभाती है।
पाखण्डी जीवन से हम सबको बचाकर हमारा जीवन संवारा है,
सत्यार्थ प्रकाश के तेज को देखकर ढोंगी–पाखण्डी कर गए किनारा।
जब महर्षि को विष पिला दिया था बहुत सारा,
मानो जैसे बुझ सा गया हो वैदिक संस्कृति का ध्रुव तारा।।1।।

वैदिक संस्कृति भारतीय समाज की अभिन्न अंग है,
वेदों की ऋचाओं में जिसका प्रसंग है।
ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद का सार,
भारतीय वैदिक संस्कृति से करते हैं हम सभी प्यार।
वेदों की शिक्षाओं को प्राप्त करके करना है इसका प्रचार–प्रसार,
वैदिक शिक्षा के बिना है जीवन जीना बिल्कुल बेकार।
वैदिक संस्कृति तथा संस्कारों को अपनाना होगा,
सांसाारिक जीवन को आध्यात्मिकता के पथ पर चलाना होगा।
विचलित मन को शान्त रखकर अर्न्तमन को निखारना होगा,
वैदिक संस्कृति से प्राप्त संस्कारों से स्वयं को हमें संवारना होगा।।2।।

— दीपक कुमार छिल्लर
म. नं.–1022, ग्राम सभा कॉलोनी,
सरदार पटेल झील के पास, पूठकलां, दिल्ली–86
मो.:–9990422051

पृष्ठ 3 का शेष

समाज निर्माण में नारी का उत्तरदायित्व

सकता। सरकारी सेवा में किरण वेदी जैसी महिला पुलिस अफसर एक कीर्तिमान स्थापित करती है तो सामाजिक क्षेत्र में मेधा पाटेकर जैसी देवियाँ भी कार्य कर रही हैं। इसी प्रकार अन्य क्षेत्रों में भी महिलाएँ सक्रिय हैं। शराबबंदी में भी महिलाओं ने प्रमुख भूमिका निभाई है, किन्तु प्रश्न है कि ऐसी महिलाएं कितनी हैं? बहुत कम। इसके विपरीत उन महिलाओं की संख्या पर्याप्त है जिन्होंने भोगवाद में अपने आपको झोंक दिया। जो केवल पैसे की मशीन बनकर रह गई है। जिनके पास उनके बच्चों के लिए भी समय नहीं है। जिन्होंने अपने चरित्र, नैतिकता, धर्म, संस्कृति को दूर फेंक कर वर्तमान पाश्चात्य शिक्षा, सभ्यता एवं संस्कृति को ओढ़ लिया है। समझ में नहीं आता कि ऐसी महिलाओं से समाज एवं राष्ट्र का क्या लाभ होगा? इस दुरावस्था को देखते हुए तो महात्मा गांधी जी का वह कथन याद आता है कि उनके अनुसार महिलाओं का क्षेत्र घर के अंदर है, बाहर नहीं। घर तथा बाहर दो बराबर के पहलू हैं। प्राचीन परम्परा में सोच समझकर ही नारी को घर का महत्त्वपूर्ण क्षेत्र सौंप दिया गया था। आज घर से बाहर आकर उसका अपना स्वरूप ही बिगड़ गया तो वह समाज के निर्माण में क्या योगदान देगी? हे जन्मदात्री जननी। हे लालनकर्त्री ललना! हे निर्माणकर्त्री मातः। हे नर की अर्धागिनी! हे सुखदायनी सुशेला! हे घर की आधार गृहिणी! हे महत्त्व प्रदाती महिला! ये सब दुकान कार्यालय, व्यापार, होटल एजेन्सियाँ रेल, वायुयान, क्लब तो तुम्हारे बिना भी चल जायेंगे, किन्तु तुम्हारे बिना संतान का निर्माण नहीं हो सकता। तुम्हारे, त्याग, सेवा, प्रयत्न बिना घर में सुख शांति नहीं हो सकती। बाह्य योगदान की अपेक्षा यह योगदान तुम्हें गौरव प्रदान करेगा। हां यदि तुम्हें सामाजिक प्रतिष्ठा ही प्राप्त करनी है तो ऐसे भी अनेक कार्य हैं, जिनसे समाज का सुधार भी होगा तथा तुम्हें समाज में गौरव पूर्ण स्थान भी मिलेगा। आज दहेज का दानव आकाश में बादल की तरह समाज में सर्वत्र व्याप्त होता जा रहा है। इस दानव के नीचे जाने कितनी अबलाएं दबकर छटपटा कर प्राण त्याग रही हैं, हे आज की प्रगतिशील नारी! क्या तुम्हें उनकी चीख पुकार सुनाई नहीं देती? क्या उनके शवों की ओर तुम्हारा ध्यान नहीं जाता? क्या वे तुम्हारी ही सजातीय नहीं हैं? मेरे विचार से नारी जाति के जागरूक हुए बिना इस दानव का अन्त नहीं हो सकता। घर में महिलाएं ही सोचती हैं कि बहू अच्छा दहेज लेकर आए। कहीं–कहीं तो स्वयं कन्या को भी इसकी भूख रहती है। यदि विवाह योग्य लड़कियां तथा उनकी माताएं सोच लें कि दहेज के लोभियों से विवाह नहीं करायेंगी तो यह कुप्रथा आसानी से रूक जायेगी। इसके अतिरिक्त हे पूज्य नारी! तू शराब, व्यभिचार तथा भ्रष्टाचार के विरुद्ध व्यापक आन्दोलन चला सकती है। सौन्दर्य प्रतियोगिता के बहाने से तुम्हारे जिस नग्न स्वरूप का प्रदर्शन किया जा रहा है, क्या तुम्हारी गरिमा के अनुरूप है? घर के सदस्यों को ऐसा न करने के लिए विवश कर सकती है। इस प्रकार सामाजिक सुधार के अनेक कार्य हैं, जो नारी को प्रतिष्ठा भी दिलायेंगे। यह तभी होगा जब आज पुरुषों की होड़ में तेजी से पतन की ओर भागती हुई नारी अपने कदमों को वहां से रोक ले।

सर्वश्रेष्ठ शिक्षा पद्धति – गुरुकुल प्रणाली

– सुखदेव व्यास

प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति एक पूर्ण शिक्षा व्यवस्था है, गुरुकुल शिक्षा पद्धति से अगर शिक्षा दी जाती है तो 24 वर्ष में ही शिक्षित युवा तैयार हो जाता है। प्राचीन युग में प्रत्येक गाँव में गुरुकुल हुआ करते थे, उसमें स्थानीय भाषा या संस्कृत में शिक्षा दी जाती थी। अंग्रेजों ने भारतीय शिक्षा प्रणाली को ध्वस्त कर अपने स्वार्थ के लिये अपनी अविकसित शिक्षा पद्धति लागू कर दी और यह कहते हैं कि भारतीयों के पास कोई शिक्षा पद्धति नहीं थी, अंग्रेजों के कारण ही भारतवासी शिक्षित हुए हैं। इसके विपरीत अंग्रेजों ने हमारी विकसित शिक्षा व्यवस्था को ध्वस्त कर अपनी प्रणाली लागू की।

सन् 1931 ई. में गोलमेज सम्मेलन में महात्मा गाँधी लंदन गये थे। उस समय अंग्रेज अधिकारियों ने गाँधी जी से कहा था– यदि अंग्रेज भारत नहीं आते तो भारत की शिक्षा व्यवस्था बन नहीं पाती। गाँधीजी को यह बात सही नहीं लगी लेकिन उनके पास ऐसे तथ्य नहीं थे कि वे उसका जवाब देते। भारत आने पर उस समय के विख्यात इतिहासकार धर्मपाल जी से कहा था कि तुम भारत की शिक्षा व्यवस्था के बारे में प्रमाण एकत्रित करो और उसके आधार पर बताओ कि भारत की शिक्षा व्यवस्था अंग्रेजों के आने के पूर्व कैसी थी?

गाँधी जी के कहने पर इतिहासकार धर्मपाल जी लंदन, फ्रान्स और जर्मनी आदि देशों और भारत में प्राचीन इतिहास की खोज करने में संलग्न हो गये और वे 40 वर्ष तक अध्ययन और अध्यापन करते रहे तथा अनेक दस्तावेज एकत्रित किये, उसका उन्होंने पूर्ण विश्लेषण किया और यह सिद्ध कर दिखाया कि– अंग्रेजों के आने से पूर्व भारत की शिक्षा व्यवस्था अत्यन्त ही श्रेष्ठ थी। भारत के प्रत्येक परिवार में शत प्रतिशत साक्षरता थी और भारतीय जन अपने बच्चों को शिक्षित करने में अपना तन–मन–धन खर्च करते थे।

विलियम एडम मैकाले के गुरु थे, मैकाले भारत की शिक्षा पद्धति के विषय में जो खोज करते थे, उसे वे अपने गुरु विलियम एडम के पास भेजते थे। उसे आधार बनाकर विलिम एडम ने भारत की शिक्षा पद्धति और व्यवस्था पर 1780 पृष्ठों की रिपोर्ट तैयार की उस रिपोर्ट को ब्रिटिश संसद में पेश किया गया। 2 फरवरी सन् 1835 को ब्रिटिश पार्लियामेन्ट में मैकाले ने भारतीय शिक्षा पद्धति और व्यवस्था पर भाषण दिया और सांसदों ने उनसे प्रश्न भी किये। उनका उत्तर भी मैकाले द्वारा दिया गया। ये सभी रिकार्ड रूप में अभी तक सुरक्षित है। मैकाले ने कहा था :–

1. मैंने पूरा भारत देखा, लेकिन भारत देश में किसी भी स्थान पर भिखारी देखने को नहीं मिला, भारत इतना समृद्ध है।

2. सूरत शहर में जितनी सम्पत्ति है, उतनी यूरोप में सभी शहरों की सम्पत्ति भी नहीं है अर्थात् भारत का शहरी इलाका व्यापार धंधों में इतना समृद्ध था कि यहाँ किसी प्रकार की बेरोजगारी नहीं थी।

3. भारत में जितना भी धन वैभव सम्पत्ति है, वह भारत की शिक्षा व्यवस्था के कारण है। जिसका तात्पर्य है शिक्षा रोजगार परक और योग्यता पर आधारित होने के कारण यह समृद्धि थी।

4. भारत में लगभग शत प्रतिशत साक्षरता है। दक्षिण भारत में साक्षरता १०० प्रतिशत है। दक्षिण भारत अर्थात् कर्नाटक, तेलंगाना, तमिलनाडु शत प्रतिशत, उत्तर भारत में लगभग 82 प्रतिशत, मध्यभारत में 87 प्रतिशत साक्षरता है। मैं कह सकता हूँ सम्पूर्ण भारत साक्षर है अर्थात् यहाँ पर कोई अनपढ़ नहीं।

5. भारत में 7 लाख 32 हजार गाँव हैं जहाँ से रेवेन्यू प्राप्त होता है और कोई भी गाँव ऐसा नहीं है जहाँ गुरुकुल या स्कूल न हो। यहाँ स्कूलों को गुरुकुल कहा जाता है। इससे यह सिद्ध होता है कि इन गुरुकुलों में पढ़ाने वाले ब्राह्मण विद्वान् और गुरु की योग्यता वाले थे।

6. गुरुकुलों में 200 से 20000 हजार तक छात्र पढ़ते हैं, जिसमें मोनिटोरियम शिक्षण पद्धति है, यही कारण है यहाँ से निकलने वाला छात्र सब विषयों में पारंगत होता था।

7. गुरुकुलों में विद्या और शिक्षा दोनों प्रदान की जाती है। नैतिकता, आध्यात्मिकता, न्याय आदि को सिखाना विद्या है, गणित, रसायन शास्त्र, विज्ञान आदि को सिखाना शिक्षा है। इससे यही लगता है मैकाले ने यहाँ की शिक्षा व्यवस्था का पूर्ण अध्ययन किया था।

8. गुरुकुलों में 8 विषयों गणित, खगोलशास्त्र, धातु विज्ञान, इंजीनियरिंग, संगीत, रसायन शास्त्र, चिकित्सा शास्त्र, भौतिक शास्त्र पढ़ाये जाते हैं। एक विषय पूर्ण होने पर दूसरा विषय पढ़ाया जाता है, इससे यह सिद्ध होता है कि गुरुकुल से निकलने वाला छात्र विद्वान् होकर ही निकलता है।

9. भारत में विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा होती थी। ऐसे गुरुकुलों की संख्या 15800 सन् 1835 तक थी।

ब्रिटेन के तत्कालीन शिक्षा मंत्री ने मैक्समूलर की रिपोर्ट के बाद स्वीकार किया कि भारत पूर्ण शिक्षित देश है। भारत में तब 7 लाख 32 हजार से भी अधिक स्कूल थे इसके विपरीत ब्रिटेन में मात्र 240 स्कूल थे।

गाँवों के गुरुकुलों के साथ ही लड़कियों को पढ़ाने के लिए अलग गुरुकुल थे। सह शिक्षा का चलन नहीं था। लड़कियों के स्कूल में लड़कियाँ, महिलायें ही शिक्षा देती थीं। गुरुकुल भी लड़के–लड़कियों के दूरस्थ रहते थे। जहाँ पर पुरुषों के जाने पर प्रतिबन्ध रहता था और लड़कों के गुरुकुलों में महिलायें प्रतिबन्धित रहती थीं। मैकाले ने ब्रिटिश संसद में कहा था कि भारत को यदि गुलाम बनाना है तो उसकी शिक्षा पद्धति को ध्वस्त किया जावे। इसी आधार पर ब्रिटिश सरकार ने भारतीय शिक्षा अधिनियम द्वारा स्थानीय भाषा और संस्कृत में शिक्षा देने को गैरकानूनी तथा अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा पद्धति लागू कर दी।

अब हमारा देश स्वतंत्र है और 70 साल से अधिक हो चुके हैं। फिर भी हम अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा दे रहे हैं। हम भारत की स्थानीय भाषा और संस्कृत में शिक्षा देने के बजाय अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा देकर देश में बेरोजगारी में वृद्धि कर रहे हैं। भारतीय शिक्षा व्यवस्था अत्यन्त ही समृद्ध थी और देश में 100 प्रतिशत साक्षरता थी। यह हमारा दुर्भाग्य था कि 100 प्रतिशत साक्षरता देश की थी उसे 17 प्रतिशत साक्षर अंग्रेज ध्वस्त कर चले गये। जब हमारे देश में भारतीय भाषाओं में शिक्षा देने की व्यवस्था थी तब हमारा देश विकसित था और आज हमारा देश शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़ कर विकासशील देश की श्रेणी में ही चल रहा है, आज आवश्यकता इस बात की है कि हमारे देश की जनता पुनः प्राचीन शिक्षा पद्धति की ओर लौटे और अपने स्तर पर 7 लाख 32 हजार गाँवों में अपने–अपने गुरुकुल चलाने की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेकर देश के विकास में अपना योगदान देवे।

– अनन्त सुन्दरम् भवन,
जहाज गली उज्जैन (म.प्र.)

यस्यच्छायाऽमृतम्

वैदिकवाङ्मयं हि नाम मानव मात्रस्य कृते सुखशान्तिसमृद्धिपरिपोषकं पुष्टिवर्धनं मनोविकारापहारि सद्विचारसार समुत्पादनपरं शश्वदात्माभ्युदयकारि जीवनज्योतिरादीप्तिकरम्। वैदिकवाङ्मयतरुर्हि नितरामच्छितो विततोऽहर्निशघनच्छाया प्रदायी मधुरफलवान्, समभ्युपेतपरिश्रान्तजनमानस शंकरोऽविरतविततितापपापहारी जगज्जीवातुरूपः। साम्प्रतम् अस्मद्देशे नवयूनां नवयुवतीनां च करेषु नापतति शमं शान्तिप्रदं सून्नतविचारवर्धकं तादृशं मङ्लमयं स्वस्थं सत्साहित्यम्, सदधीत्यनवतरुणा नवतरुण्यश्च्याविरतं कलुषितविचारधारानिमग्नाः सततं श्रृंङ्गारभावजागरूकाः कामयमाना अपि सत्पथाध्वनीना न भवन्ति, प्रत्युत कलुषितभावभरितसाहित्या धीतितत्परास्तथाविधाऽविरतचलचित्राजगदर्शन संदीप्तकामवासनाऽनलास्तथा विधेष्वेवानिशं विचारेषु ब्रुडित मानसा न कथमपि जीवनाभ्युदयाध्वानं लभन्ते।

सत्यस्य पन्था वितो देवयानः

अयि भारतीया भ्रातरः! यदि यूयं वास्तविकं तथ्यं सुखमासदयितुं कामयध्वे तर्हि त्वरया विहाय विविधान् अवद्यानध्वनः कल्मषान्, भूयो वैदिकमार्गानुररीकुरुत। स एव सारभूतः सत्यो देवयानो महान् पन्था।: इन्द्रियाणां दमनेन साधुना चेतसा चिन्तयत जन्ममरणापवर्गाय जीवनवैशद्याय वैदिकसंस्कृतिसम्पदम् अविरामोन्नतिपरां कापटिकजनजालनिर्मलगुर्वीम्। एष एव मार्गः सच्चिदानन्दस्वरूपस्य प्रभोः सम्मेलनाय सांसारिक कष्टकलापापहाराय परमशान्तेरुपलब्ध्ये च।

पश्य देवस्य काव्यं न ममार न जीर्यति

भगवती श्रुतिः स्वयं वैदिकसाहित्यस्य संस्तवं कुरुते। ऋग्यजुस्सामाथर्वरूपं देवस्य परमात्मनः काव्यं कवित्वरूपं सार्वकालिकम्, यत्कदापि न जीर्णं भवित, न च म्रियते। एतत्काव्याध्ययनाध्यापनाभ्यामेव परमां शाश्वतिकी च शांति यूयं यास्यथ। अयमेव सुखावहो दुःखापहाश्च मार्गः

नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय

भगवदाराधनं हि जीवनस्य परमं महत्त्वम्। यदि जगति विविधानि अनीकानि विजित्य विविधान् अरीन् संमर्द्य, धन-धान्य विविधालङ्कारसम्भारभूतिं भव्यभावनायोगान् आसाद्य प्रचुरां मेदिनीं च विजित्य तादृशमानन्दम् उपलब्धासि सर्वमिदं क्षणिकं विनाशि च सुखम्। यद्येषु तथ्यं सुखमभविष्यत् तर्हि कथं धनधान्य पूर्णजीवनाः जना आरण्यकाः संजाताः। सकलान् सांसारिकरागान् सांसारिक जनदृष्टौ सुखागारान् विहाय कथ मुनित्वमापन्नाः। कथं जनकादयो राजर्षयः स्वीयां समृद्धां राज्यसमृद्धिं परिहाय विपिनवासिनोऽभूवन्। 'नाल्पे सुखमस्ति भूम्नि सुखम्।' यो वै भूमा तत् सुखम्।' 'भूमा वै परमैश्वरः।

यजुंषि प्रतिपादितम्

HOW TO ESTABLISH AS A GRAHSTHI

There are four ashramas as Brahmcharya, Grahstha, Vanprastha & sanyas in the vedic system of living. Our Vedic philosophers being practical men have already thought over the partitions of our life's time. The above mentioned gradation deals with inner joy.

Life is a journey we already know. How to maintain this journey joyous and happy? This is the question which is to be answered in the light of our Ashram living.

First of all you have to become a man and man means to catch up thinking process to act what the righteousness is , to behave what the betterment is to others is so on and so forth to test your credibility in the society. Certainly, you are a human being which differs from other living ones.

You take birth in a family and you are brought up by your parents adopting certain skills to mould favourable to you at all times when your childhood begins. Their love sympathy, affection wrapped up with aesthetic sense give you turnings to prepare you physically, mentally spiritually and socially. All the impressions you catch in a normal way. You become a part and parcel of your family . In other words you are a member of society. At the age of 25 years you become a good thinker, a good contemplater. You discern the good from the evil. If you do good, you will be esteemed. you understand the etiquette, you understand your responsibilities for your parents, for the neighbours and for the nation. You may become patriot filled with utmost feelings to your country. What a philanthrophic idea you stage up. Really over the age of 21, you are physically and mentally ripened. Under 21 your decisions may mislead you. The changes of your body and brain will tell you all. So at the age of 25 you are perfectly capable for the age to get married and produce children. Female body demands the limit of 16 to 18 years of age on medical ground.

Secondly, it is proper on your part when you are employed or do some business of your own and your Conscience declares you to be a source of independently earnings to maintain your Grahstha Ashram with skillful handlings. Then you are respectable in the society and dexterious to conduct your own family. It means you have learnt lore (vidya) of how to earn and how to spend. You might have undergone the Brahmacharya Ashram first and prepared youself well because of your tactics of knowledge and experience. Only you have to learn how to overcome the sexual urge and let it flow in constructive channels of life . This can be the mental level at the age of maturity that is 25 years.

BY B.R.SHARMA VIBHAKAR

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :- www.facebook.com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें तथा अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com
दूरभाष : 011-42415359, 23274771)

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

विश्व भारती गुरुकुल भैयापरु लाढ़ौत, रोहतक का वार्षिकोत्सव समारेह भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

सम्मेलन की अध्यक्षता स्वामी आर्यवेश जी ने की तथा गुरुकुल के संस्थापक आचार्य हरिदत्त जी का रहा सान्निध्य

मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. योगानन्द शास्त्री जी एवं विशिष्ट अतिथि समाजसेवी श्री राजेश जैन, युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश तथा श्री जितेन्द्र भाटिया सम्मिलित हुए

गुरुकुल के निदेशक श्री नन्दकिशोर ने किया मंच संचालन

गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने दिखाये अद्भुत कार्यक्रम

विश्व भारतीय गुरुकुल भैयापुर लाढ़ौत, रोहतक का वार्षिकोत्सव 4 व 5 नवम्बर, 2023 को बड़े उत्साह के साथ बनाया गया। समारोह में सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी, दिल्ली विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष डॉ. योगानन्द शास्त्री, तेजस्वी युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी, आर्य वीरदल के नेता श्री जितेन्द्र भाटिया, समाजसेवी श्री मंजू पालीवाल, भाजपा के संगठन मंत्री श्री फणीन्द्रनाथ शर्मा, बेटी बचाओ अभियान की अध्यक्ष बहन पूनम आर्या एवं संयोजक बहन प्रवेश आर्या, आर्य वीरदल राजस्थान के संचालक श्री भवदेव शास्त्री, आचार्य संदीप एवं आचार्य धर्मवीर मुमुक्षु, आर्य वीरदल के प्रमुख शिक्षक श्री प्रवीण आर्य आदि विद्वत्वर्ग सम्मिलित हुए। इस दो दिवसीय समारोह में जहां आर्य समाज के विद्वानों के उपदेश एवं व्याख्यान हुए वहीं गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने भारतीय व्यायाम के विविध प्रदर्शन एवं अद्भुत कार्यक्रम प्रस्तुत किये।

5 नवम्बर, 2023 को प्रातः 10 बजे सरस्वती सदन छात्रावास का लोकार्पण स्वामी आर्यवेश जी एवं डॉ. योगानन्द जी शास्त्री के कर–कमलों से किया गया। तत्पश्चात् ध्वजारोहण के द्वारा समारोह का विधिवत उद्घाटन किया गया। ध्वजारोहण स्वामी आर्यवेश जी, डॉ. योगानन्द शास्त्री, आचार्य हरिदत्त जी, श्री जितेन्द्र भाटिया, स्वामी आदित्यवेश जी आदि ने किया।

मुख्य मंच से उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित करते हुए डॉ. योगानन्द शास्त्री ने प्राचीन वैदिक संस्कृति एवं गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के महत्त्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने इतिहास के उदाहरण प्रस्तुत करके यह बताया कि संस्कृत भाषा एवं वैदिक वाङ्गमय में जीवन के विविध पहलुओं पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है। अतः हमें गुरुकुलों को मजबूत करना चाहिए।

स्वामी आदित्यवेश जी ने गुरुकुल शिक्षा के सम्बन्ध में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में शिक्षा तो दी जाती है, किन्तु संस्कार नहीं दिये जाते, जबकि गुरुकुलों में शिक्षा के साथ–साथ संस्कार भी दिये जाते हैं। अतः यह शिक्षा प्रणाली बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

स्वामी आर्यवेश जी ने अपने व्याख्यान में संस्कारों पर बल दिया। उन्होंने कहा कि बच्चे का निर्माण माता–पिता के कुल और उसके पश्चात् गुरु के कुल में ही हो सकता है। 8 वर्ष की आयु तक बच्चा माता–पिता के संरक्षण में संस्कार लेता है और उसके पश्चात् उसे गुरुकुल में आचार्य को सौंप दिया जाता है, फिर वह अपने आचार्य से संस्कार ग्रहण करता है। स्वामी जी ने भारत के भविष्य के लिए गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बताया। उन्होंने कहा कि देश में गुरुकुलों को सक्षम बनाना अत्यन्त आवश्यक है।

श्री जितेन्द्र भाटिया ने एम. डी.एच. के अध्यक्ष महाशय राजीव गुलाटी का संदेश प्रस्तुत किया और उनकी ओर से आर्थिक सहयोग की घोषणा की।

गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने अपने व्यायाम प्रदर्शन से उपस्थित जनसमूह को अत्यन्त प्रभावित किया। कार्यक्रम भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (दूरभाष : 011-23274771)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।